भारत सरकार

आयुष मंत्रालय

लोक सभा

अतारांकित प्रश्न सं. 2138

31 जुलाई, 2026 को पूछे जाने वाले प्रश्न का उत्तर

गैर-संचारी रोगों के कारण मृत्यु

2138. डॉ. संबित पात्रा:

क्या आयुष मंत्री यह बताने की कृपा करेंगे कि:

(क) क्या यह सच है कि भारत में सर्वाधिक मृत्यु गैर-संचारी रोगों के कारण होती है और इस संबंध में हृदय संबंधी बीमारियां मृत्यु का एक प्रमुख कारण हैं;

(ख) आयुर्वेद, सिद्ध, योग आदि जैसी चिकित्सा की पारम्परिक पद्धतियों के माध्यम से हृदय संबंधी बीमारियों की रोकथाम और उपचार को आम जनता के बीच इसे लोकप्रिय बनाने के लिए सरकार द्वारा क्या उपाय किए गए हैं;

(ग) हृदय संबंधी बीमारियों की रोकथाम और उपचार के लिए आवश्यक आयुष औषधियों की पर्याप्त उपलब्धता सुनिश्चित करने के लिए सरकार द्वारा क्या सुधारात्मक उपाय किए गए हैं;

(घ) क्या सरकार ने ओडिशा और भारत के अष्टलक्ष्मी क्षेत्र अर्थात् पूर्वोत्तर राज्यों में हृदय संबंधी बीमारियों की रोकथाम और उपचार के लिए कोई विशिष्ट कार्य-योजना तैयार की है और यदि हां, तो तत्संबंधी ब्यौरा क्या है; और

(ङ) क्या सरकार का देश में राज्य/संघ राज्यक्षेत्र-वार, विशेष रूप से ओडिशा और पूर्वोत्तर राज्यों में भारतीय पारम्परिक चिकित्सा पद्धति में उपयोग की जाने वाली औषधियों के उत्पादन को बढ़ावा देने के लिए कोई नीति बनाने का विचार है?

<u>उत्तर</u>

आयुष मंत्रालय के राज्य मंत्री (स्वतंत्र प्रभार)

(श्री प्रतापराव जाधव)

(क): अखिल भारतीय आयुर्वेद संस्थान (एआईआईए) ने साक्ष्य-आधारित आयुर्वेद उपचार उपलब्ध कराने वाले समर्पित विशेषज्ञ क्लीनिकों के माध्यम से गैर-संचारी रोगों (एनसीडी) के प्रबंधन को प्राथमिकता दी है। इसके अतिरिक्त, संस्थान ने गैर-संचारी रोगों (संतर्पणोत्थ विकारों) पर केंद्रित अनेक अनुसंधान पहलें की हैं, जिनमें स्नातकोत्तर शोध-प्रबंध, डॉक्टोरल अनुसंधान, इंट्राम्यूरल तथा सहयोगात्मक अनुसंधान परियोजनाएँ शामिल हैं। इन पहलों का उद्देश्य इन रोगों की रोकथाम, प्रबंधन तथा समन्वित उपचार के लिए वैज्ञानिक साक्ष्य विकसित करना है।

(ख): आयुष मंत्रालय के अधीन राष्ट्रीय संस्थानों/अनुसंधान परिषदों तथा केंद्रीय सरकारी स्वास्थ्य योजना (सीजीएचएस) द्वारा किए गए उपाय निम्नलिखित हैं:

i. अखिल भारतीय आयुर्वेद संस्थान (एआईआईए) ने एआईआईए अस्पताल में गैर-संचारी रोगों (एनसीडी) के प्रबंधन हेतु विशेषीकृत निवारक देखभाल क्लीनिक स्थापित किए हैं। इसके अतिरिक्त, संस्थान एक समर्पित योग क्लीनिक का संचालन करता है, जहाँ बाह्य रोगियों (ओपीडी) एवं भर्ती रोगियों (आईपीडी) दोनों के लिए योग-आधारित उपचारात्मक सेवाएँ प्रदान की जाती हैं, जिनका विशेष उद्देश्य गैर-संचारी

रोगों की रोकथाम एवं प्रबंधन है। इसके अलावा, एआईआईए स्वस्थ जीवनशैली को बढ़ावा देने तथा रोगियों एवं आमजन में गैर-संचारी रोगों की रोकथाम एवं प्रबंधन के संबंध में जागरूकता बढ़ाने के लिए नियमित रूप से जनस्वास्थ्य संपर्क कार्यक्रम, स्वास्थ्य शिविर, जागरूकता अभियान तथा शैक्षिक गतिविधियों का आयोजन करता है।

ii. आयुर्वेद के राष्ट्रीय संस्थान, अर्थात् पूर्वोत्तर आयुर्वेद एवं होम्योपैथी संस्थान (एनईआईएएच) ने भी निम्नलिखित कदम उठाए हैं– (i) कायचिकित्सा विभाग में निःशुल्क परामर्श सहित नियमित ओपीडी एवं आईपीडी सेवाएँ, (ii) नियमित योग प्रदर्शन सत्र, (iii) आहार संबंधी परामर्श, तथा (iv) हृदय संबंधी रोगों सहित दीर्घकालिक रोगों के लिए निवारक, स्वास्थ्य संवर्धन एवं पारंपरिक चिकित्सा प्रणालियों के माध्यम से प्रबंधन के संबंध में गाँवों, विद्यालयों, सरकारी विभागों, सैन्य प्रतिष्ठानों, सामुदायिक स्थलों तथा अनाथालयों में विभिन्न स्वास्थ्य शिविरों का आयोजन।

iii. राष्ट्रीय आयुर्वेद संस्थान (एनआईए) द्वारा भी निवारक हृदय रोग ओपीडी का संचालन किया जा रहा है तथा हृदय संबंधी रोगों से संबंधित स्वास्थ्य शिविरों का आयोजन किया जा रहा है।

iv. केंद्रीय सिद्ध अनुसंधान परिषद (सीसीआरएस) ने जीवनशैली संबंधी एवं गैर-संचारी रोगों की रोकथाम में अपने उपचारात्मक हस्तक्षेपों तथा आहार विनियमन, सिद्धर योगम्, कायकर्पम् चिकित्सा एवं व्यक्ति-विशिष्ट जीवनशैली संबंधी उपायों पर विशेष बल देकर उल्लेखनीय भूमिका निभाई है। शरीर के संरचनात्मक स्वरूप का मूल्यांकन जो रोगों के निदान के लिए आधारभूत साधन के रूप में कार्य करता है, रोकथाम, रोग-पूर्वानुमान तथा उपचार पद्धति के निर्धारण के लिए सीसीआरएस द्वारा सिद्ध उडल इयल इन्वेन्टरी विकसित की गई है। इसके अतिरिक्त, गैर-संचारी रोग ओपीडी तथा योगम् ओपीडी सेवाओं के माध्यम से आमजन को विशेषीकृत उपचार उपलब्ध कराया जा रहा है।

v. केंद्रीय सरकारी स्वास्थ्य योजना (सीजीएचएस) अपने आयुष आरोग्य केंद्रों के माध्यम से स्वास्थ्य देख-रेख सेवाएँ प्रदान करती है, जहाँ आयुर्वेद, यूनानी, सिद्ध तथा होम्योपैथी के योग्य चिकित्सकों द्वारा संबंधित चिकित्सा पद्धतियों के अनुसार परामर्श, निवारक स्वास्थ्य देखभाल संबंधी सलाह तथा उपचार उपलब्ध कराया जाता है। दिल्ली में सीजीएचएस के आयुष आरोग्य केंद्रों के माध्यम से योग सेवाएँ भी प्रदान की जाती हैं, जहाँ योग प्रशिक्षक हृदय-वाहिका संबंधी रोगों सहित जीवनशैली संबंधी विकारों की रोकथाम एवं प्रबंधन के लिए योग-आधारित हस्तक्षेपों सहित स्वस्थ जीवनशैली अपनाने को प्रोत्साहित करते हैं। आयुष आरोग्य केंद्रों में नियमित परामर्श के दौरान सीजीएचएस लाभार्थियों को स्वास्थ्य शिक्षा तथा जीवनशैली में आवश्यक परिवर्तन संबंधी परामर्श भी प्रदान किया जाता है।

(ग): आयुर्वेद के राष्ट्रीय संस्थान, अर्थात् अखिल भारतीय आयुर्वेद संस्थान (एआईआईए), पूर्वोत्तर आयुर्वेद एवं होम्योपैथी संस्थान (एनईआईएएच) तथा राष्ट्रीय आयुर्वेद संस्थान (एनआईए) द्वारा हृदय रोगों सहित विभिन्न रोगों के लिए परामर्श सेवाएँ प्रदान की जाती हैं तथा संबंधित अस्पताल में औषधियों की उपलब्धता के आधार पर रोगियों को निःशुल्क आयुर्वेदिक औषधियाँ उपलब्ध कराई जाती हैं। इसके अतिरिक्त, नियमित रोगी देखभाल के साथ-साथ एआईआईए फार्मेसी द्वारा स्नातकोत्तर, डॉक्टोरल, संकाय द्वारा संचालित तथा सहयोगात्मक अनुसंधान गतिविधियों के समर्थन हेतु, आवश्यकता-आधारित औषधीय योगों, स्वामित्वाधीन आयुर्वेदिक औषधियों तथा नवीन औषधि मात्रा-रूपों का विकास और विनिर्माण भी किया जाता है।

सीजीएचएस द्वारा हृदय संबंधी रोगों की रोकथाम एवं प्रबंधन में प्रयुक्त आयुष औषधियों सहित अन्य आयुष औषधियों की उपलब्धता, एक केंद्रीकृत खरीद एवं आपूर्ति प्रणाली के माध्यम से सुनिश्चित की जाती है। इन औषधियों की खरीद, सीजीएचएस के खरीद संबंधी दिशानिर्देशों के अनुसार अनुमोदित एवं लाइसेंसधारी निर्माताओं से की जाती है तथा इन्हें लाभार्थियों को वितरण हेतु सीजीएचएस के आयुष

आरोग्य केंद्रों को उपलब्ध कराया जाता है। इसके अतिरिक्त, यदि चिकित्सक द्वारा लिखी गई कोई आयुष औषधि सीजीएचएस के आयुष आरोग्य केंद्र में उपलब्ध नहीं होती है, तो उसे अधिकृत स्थानीय औषधि विक्रेता (ऑथराइज्ड लोकल केमिस्ट-एएलसी) व्यवस्था के माध्यम से भी प्राप्त किया जा सकता है, जैसा कि एलोपैथी चिकित्सा प्रणाली के अंतर्गत भी प्रावधान है।

(घ) एवं (ङ): वर्तमान में इस संबंध में कोई प्रस्ताव विचाराधीन नहीं है।

*****